Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2026 = 8.727
https://www.srjis.com/issues_data/290
Peer Reviewed & Refereed Journal, MAR-APRIL 2026, Vol- 14/94

ऑनलाइन दिनचर्या और युवा पीढ़ी

डॉ. राजीव कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, स्वामी शुकदेवानंद विश्वविद्यालय, शाहजहॉपुर, उत्तर प्रदेश।

Paper Received On: 20 MAR 2026

Peer Reviewed On: 24 APRIL 2026

Published On: 01 MAY 2026

Abstract

भारतीय जीवन शैली में अच्छा आचरण, ईमानदारी, चरित्र–निर्माण, त्याग, परोपकार, विनम्रता, प्रेम, सद्भावना, करुणा, दया, आदर और सम्मान जैसे गुणों को प्राचीन काल से ही उच्च स्थान दिया गया है लेकिन आज के दौर में अपराध, ऑनलाइन अश्लीलता, नैतिक पतन, अवसरवादिता, व्यवसायीकरण, जनरेशन–गैप जैसी समस्याओं को बढ़ावा मिल रहा है। हालॉकि प्रौद्योगिकी ने जीवन को सुविधाजनक तो बनाया है लेकिन निजता या गोपनीयता जैसी समस्याएं भी बढ़ रहीं हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इन समस्याओं के मूल में डिजिटल सोशल मीडिया प्लेटफार्म की भूमिका अधिक प्रभावी है। युवाओं की सोच पर ऑनलाइन सामग्री का गहरा प्रभाव पड़ रहा है क्योंकि ऑनलाइन शिक्षा के बढ़ते चलन के कारण अधिकांश बच्चों के पास अपना अलग स्मार्टफोन है। अतिशीघ्र चर्चित होने और पैसा कमाने के लिए डिजिटल सोशल मीडिया प्लेटफार्म और यूट्यूब पर आपत्तिजनक सामग्री का आदान–प्रदान भार्टकट माध्यम का रूप ले रहा है। यूट्यूब, गूगल और विविध प्रकार के सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर उपलब्ध अश्लील सामग्री तक युवा पीढ़ी की आसान पहुंच भारतीय संस्कृति के मूल सिद्धांतों के विपरीत है। अध्ययन का उद्देश्य ऑनलाइन दिनचर्या के प्रति जागरुकता पैदा करना है। प्रस्तुत शोध पत्र में विश्लेशणात्मक विधि की सहायता से निश्कर्शों को प्राप्त करने के लिए द्वितीयक ऑकड़ों का प्रयोग किया गया है।

मुख्य शब्दः *ऑनलाइन दिनचर्या, युवा पीढ़ी, सोशल मीडिया, इंटरनेट, स्मार्टफोन ।*

उद्देश्य

इस शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य ऑनलाइन दिनचर्या एवं युवा पीढ़ी के बीच पाए जाने वाले सम्बन्धों का अध्ययन करना है। यह ज्ञात करना कि ऑनलाइन दिनचर्या युवा पीढ़ी को कैसे प्रभावित करती है। इसके साथ–साथ ऑनलाइन दिनचर्या के बारे में जागरूक करना, सोशल मीडिया व डिजिटल माध्यमों द्वारा होने वाली नकारात्मक घटनाओं के विरूद्ध सतर्क करना।

शोध विधि

यह शोध पत्र द्वितीयक तथ्यों पर आधारित है। जिसमें तथ्यों का संकलन मुख्य रूप से प्रकाशित भाोध पत्रों व दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित लेखों पर आधारित है। संदर्भ के लिए एपीए 7वें संस्करण का प्रयोग किया गया है।

Copyright © 2026, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

समस्या की पृश्ठभूमि

वर्तमान में मोबाइल, सो ाल मीडिया और इंटरनेट के बिना जीवन अधूरा–सा लगता है। डिजिटल सोशल मीडिया प्लेटफार्म का दायरा बढ़ रहा है जोकि हमारी जीवन–शैली को सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रकार से प्रभावित कर रहा है। साइबर अपराध, ऑनलाइन ठगी व ऑनलाइन अ लीलता जीवन–शैली को नकारात्मक रूप से प्रभावित करने के साथ–साथ युवा पीढ़ी के लिए रोजगार का जरिया भी बन रही है जोकि मानवीय मूल्यों के विपरीत होने के साथ–साथ नयी पीढ़ी व सम्पूर्ण समाज के लिए घातक सिद्ध हो रही है। ऐसे में यह प्रासंगिक हो जाता है कि ऑनलाइन दिनचर्या व नयी पीढ़ी के परस्पर सम्बन्धों को समझा जाए। प्रस्तुत शोध पत्र में ऑनलाइन दिनचर्या व युवा पीढ़ी के आपसी सम्बन्धों को समझने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना

एआइ और तकनीकी के इस दौर में ऑनलाइन माध्यमों के बिना जीवन अधूरा सा लगता है। ऑनलाइन दिनचर्या का आ ाय इंटरनेट या ऑनलाइन माध्यमों के द्वारा की जाने वाली दैनिक गतिविधियों से है। अलग–अलग परिप्रेक्ष्य में युवा पीढ़ी की आयु में भिन्नता हो सकती है लेकिन लेखक का युवा पीढ़ी से आशय उस पीढ़ी से है जो सामान्यतः 15 वर्श से 25 वर्श के मध्य में आती है। आज के दौर में तकनीकी के बिना जीवन अधूरा है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसका का दखल है। तकनीक ने शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार, आर्थिक लेन–देन, ऑनलाइन शॉपिंग, काम करने के तरीके और मनोरंजन के साधनों को भी बदल दिया है। भारतीय समाज और युवा पीढ़ी को बदलने में सबसे अधिक योगदान तुलनात्मक रूप से स्मार्टफोन और सो ाल मीडिया का है। इंटरनेट और ऑनलाइन प्लेटफार्म्स पर युवाओं की बढ़ती निर्भरता उनकी पढ़ाई व मानसिक स्वास्थ्य के साथ–साथ उनके सामाजिक जीवन को भी प्रभावित कर रही है।

ऑनलाइन दिनचर्या

आज सभी आयु वर्ग के लोग बड़ी मात्रा में उपलब्ध ऑनलाइन सूचना और डिजिटल प्लेटफार्मों का उपयोग अपनी सुविधा के लिए कर रहे हैं। प्रौद्योगिकी ने जीवन–शैली को आसान तथा सुविधाजनक बनाने के साथ–साथ समय की भी बचत की है। जैसे–जैसे तकनीक उन्नत हो रही है जीवन जीने का तरीका भी बदल रहा है। वैश्वीकरण के इस युग में समय और दूरी की मजबूरियां कम हो रही हैं। इंटरनेट इसके लिए एक मंच के रूप में सशक्त भूमिका का निर्वहन कर रहा है। संचार क्रान्ति के इस दौर में ऑनलाइन दिनचर्या आज की आव यकता है लेकिन प्रत्यक्ष या वास्तविक जीवन के सम्बन्धों को अनदेखा न किया जाए। शर्मा (2025)[1] बतातीं हैं कि समय बदल चुका है। अब लोगों ने संबंधों में भावुकता के मुकाबले व्यावहारिकता को अपना लिया है। वैवाहिक संबंधों में स्थायित्व कमजोर हो रहा है। दशकों साथ रहने के बाद भी तलाक हो रहा है। नयी पीढ़ी विवाह या संबंधों को तोड़ने के लिए अब समाज की परवाह

Copyright © 2026, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

नहीं करती है। संबंधों में हत्या का चलन बढ़ रहा है। वह लिखतीं हैं कि जीवन सिर्फ इंस्टाग्राम, फेसबुक आदि पर कुछ भोयर करने या रील बनाने के लिए नहीं है। इसके अर्थ बहुत व्यापक हैं। त्रिवेदी और मिश्रा (2022)[2] अपने भाोध पत्र में बताते हैं कि 65.56 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत थे कि इंटरनेट युवाओं के बेहतर जीवन स्तर के प्रति जागरुकता पैदा करने में सहायक है। इसी प्रकार 18.52 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत एवं 15.93 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि पता नहीं कि इंटरनेट युवाओं के बेहतर जीवन स्तर के प्रति जागरुकता पैदा करने में सहायक है।

डिजिटल प्रौद्योगिकी और आधुनिक जीवन–शैली

आधुनिक जीवन–शैली और डिजिटल प्रौद्योगिकी एक दूसरे के पर्याय बन गए हैं। नवीन प्रौद्योगिकी ने हमारी जीवन–शैली को सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों रूपों में प्रभावित किया है। जहॉ इससे जीवन की गुणवत्ता में काफी बदलाव आया है वहीं स्वास्थ्य तथा पर्यावरण जैसी विविध प्रकार की समस्याऍ भी बढ़ रहीं हैं। आज के दौर में प्रौद्योगिकी तथा जीवन– ौली एक दूसरे के पूरक हैं। तकनीक के अभाव में जीवन की कल्पना करना भी कितना असहज सा प्रतीत होता है। प्रौद्योगिकी जीवन को सुविधाजनक बनाने के साथ–साथ रोजगार का जरिया भी बन रहा है। कुमार (2026)[3] अपने भाोध पत्र में बताते हैं कि विभिन्न प्रकार के डिजिटल माध्यमों ने जहॉ लोगों को जोड़ने का काम किया है वहीं इसने आमने–सामने के सम्बन्धों को कमजोर किया है। जहॉ इसके माध्यम से जीविका के नवीन साधनों का स्रजन हो रहा है वहीं रोजगार के परंपरागत साधनों के प्रति लोगों का मोहभंग हो रहा है। इलेक्ट्रॉनिक उपकरण व सोशल मीडिया शिक्षण व समाजीकरण में प्रभावी भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। ऑनलाइन शिक्षण नए विकल्प व व्यवसाय के रूप में अपनी पहचान बना रहा है लेकिन शिक्षक व छात्रों की भौतिक उपस्थिति में शिक्षण अधिक प्रभावी होता है। स्मार्टफोन ने खरीददारी के तरीके को बदल दिया है। ऑनलाइन खरीददारी में समय व श्रम दोनों की बचत होती है। तकनीक या इंटरनेट हमारे लिए उपयोगी है लेकिन मोबाइल या स्क्रीन का अधिक उपयोग स्वास्थ्य समस्या का कारण भी बन रहा है। डिजिटल प्रौद्योगिकी ने संचार को बेहतर तो किया है लेकिन प्राइवेसी या निजता व्यक्तिगत जीवन के लिए बड़ी समस्या बन रही है।

हालांकि प्रौद्योगिकी ने जीवन को सुविधाजनक तो बनाया है लेकिन निजता या गोपनीयता जैसी समस्याऍ भी बढ़ रहीं हैं, जिसे नवीन प्रौद्योगिकी ने सामने लाया है। आज निजी जानकारी को सुरक्षित रखना बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य है। वर्तमान समय में प्रत्यक्ष संपर्क की तुलना में अप्रत्यक्ष संपर्क बढ़ रहा है। लोग व्यक्तिगत रूप से मिलने की बजाए ऑनलाइन मिलना पसंद कर रहे हैं। डिजिटल प्रौद्योगिकी ने जहॉ संचार की बाधाओं को कम किया है वहीं प्रौद्योगिकी पर अधिक निर्भरता आपसी सामाजिक सम्बन्धों को कमजोर कर रही है। इस नयी प्रौद्योगिकी ने समाजीकरण के तौर–तरीकों को भी बदल दिया है। गुप्ता (2026)[4] बताते हैं कि परिवार के कमजोर होने के इस दौर में सबसे अधिक बचपन प्रभावित हुआ है। परंपरागत समाजीकरण जिसमें दादा–दादी और नाना–नानी की कहानियां होतीं थी अब उसके स्थान

Copyright © 2026, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पर बच्चों का समाजीकरण कंप्यूटर, इंटरनेट, टीवी, वीडियो और मोबाइल गेम्स जैसे संचार माध्यमों के साथ हो रहा है। बच्चों के विकास और देखभाल में दैहिक समाज की अपेक्षा तकनीकी समाज की भूमिका बढ़ती जा रही है। बच्चों का मनोरंजन और खेलकूद संचार माध्यमों की दुनियॉ तक सिमट रहा है।

सूचना प्रदूशण

इंटरनेट और सो ाल मीडिया द्वारा अवांक्षित, अप्रासंगिक, असत्य, अनाव यक या कम मूल्य वाली सूचनाओं की बहुतायत जो सही जानकारी खोजने और निर्णय लेने की क्षमता को बाधित करती है सूचना प्रदूशण कहलाती है। वर्तमान समय में सत्य के साथ–साथ गलत, आधी–अधूरी और अनाव यक सूचनाओं की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है जिसके कारण सही और गलत की पहचान करना अत्यंत कठिन हो गया है। सूचना प्रदूशण समाज के लिए एक नए जोखिम के रूप मे सामने आ रहा है। असत्य, अनाव यक और झूठी सूचनाओं की बजह से कई बार अप्रिय घटनाओं के साथ–साथ समाज में जातीय और धार्मिक उन्माद भी उत्पन्न हो जाते हैं। इस प्रकार की घटनाओं से सामाजिक सौहार्द की समस्या उत्पन्न हो जाती है। यादव (2026)[5] अपने लेख में बताते है कि पूरे वि व में लगभग 86 प्रतिशत लोग कभी न कभी असत्य सूचना के संपर्क में आ चुके हैं। इंटररनेट पर उपलब्ध 40 प्रतिशत सूचनाएं गलत मानी जाती हैं। ऑनलाइन उपलब्ध कुल सामग्री में से लगभग 62 प्रति ात झूठी या असत्य होती है। अनुमानतः 2025 में लगभग 80 लाख फर्जी वीडियो सोशल मीडिया पर साझा किए गए हैं। अनुमानतः वाट्सएप पर 64 प्रति ात, फेसबुक पर 18 प्रतिशत, एक्स पर 12 प्रति ात सूचनाएं क्रमशः गलत या भ्रामक होती हैं। इंटरनेट संपूर्ण विश्व को जोड़ता है, लेकिन अब इस माध्यम को प्रदूशण मुक्त और साफ–सुथरा रखना हम सबका दायित्व है।

प्रौद्योगिकी की लत

डिजिटल उपकरणों, ऑनलाइन गतिविधियों या सोशल मीडिया का अत्यधिक, समस्याग्रस्त और बाध्यकारी उपयोग जब विकार के रूप में व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाता है तब इस प्रकार की निर्भरता लत कहलाती है। सोशल मीडिया या स्क्रीन के सामने तय सीमा से अधिक समय व्यतीत करने की आदत एक लत के रूप में परिवर्तित होती जा रही है। नयी पीढ़ी को इंटरनेट की आसान उपलब्धता और उसका अनियंत्रित उपयोग लत का रूप ले रहा है जिसके मकड़जाल में निकलना अत्यंत कठिन सा प्रतीत होता है। सोशल मीडिया प्लेटफार्म्स का अति ाय उपयोग युवाओं की खु ाहाली को प्रभावित कर रहा है। रिपोर्ट (2026)[6] वर्ल्ड हैपिनेस रिपोर्ट में इंटरनेट के अत्यधिक उपयोग पर चिंता जताई गई है। रिपोर्ट में बताया गया है कि इंटरनेट मीडिया का अधिकाधिक उपयोग नयी पीढ़ी की खु ाहाली को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहा है। ऑक्सफोर्ड वि वविद्यालय द्वारा जारी इस रिपोर्ट में बताया गया है कि खुशहाली और इंटरनेट मीडिया के अधिक उपयोग के बीच नकारात्मक संबन्ध लड़कियों में वि ोश रूप से पाया गया है। जबकि इंटरनेट मीडिया का कम उपयोग करने वाली किशोरियों में यह गिरावट नहीं

Copyright © 2026, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

देखी गयी। जो युवा इंटरनेट मीडिया का उपयोग प्रतिदिन एक घंटे से कम करते हैं, उनमें खु ाहाली का स्तर सबसे अधिक पाया गया है। डिजिटल मीडिया प्लेटफार्म्स पर घंटों स्क्राल करना जीवन मूल्यांकन में गिरावट का प्रमुख कारण है। मिश्र (2026)[7] अपने लेख में बताते हैं कि यदि बार–बार फोन देखने का मन करता है और फोन से दूर रहने पर बेचैनी होती है तो सावधान हो जाइए। इसका अर्थ है कि आपको फोन की लत लग चुकी है जोकि एक प्रकार का नशा है। फोन देखते रहने की आदत आपको बीमार भी कर सकती है। फोन पर अत्यधिक निर्भरता से डिजिटल डिमेंशिया जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं।

यद्यपि अभी तक इस प्रकार की लत को औपचारिक रूप से मानसिक विकारों की श्रेणी में भाामिल नहीं किया गया है। लेकिन यदि अनौपचारिक रूप से देखा जाए तो ऑनलाइन दिनचर्या, या स्क्रीन का अधिकतम प्रयोग भाारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है। जिसमें दृश्टि विकार के साथ–साथ मानसिक समस्याएं प्रमुख है। डिजिटल प्रौद्योगिकी के व्यापक प्रयोग से प्रौद्योगिकी पर निर्भरता की लत, स्वास्थ्य समस्याएँ, सामाजिक मेल–मिलाप में कमी, जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। इसके साथ ही मोबाइल या स्क्रीन की लत पारिवारिक सदस्यों के बीच आपसी सम्बन्धों को कमजोर कर रही है। युवा पीढ़ी सामाजिक प्राणी से वर्चुअल प्राणी बनने की दिशा में कदम बढ़ा चुकी है। मित्तल व कुमारी (2017)[8] ने अध्ययन में बताया है कि आज से दो दशक पूर्व कि ाोर संवाद के लिए प्रत्यक्ष मुलाकात का उपयोग करते थे लेकिन आज इसका स्थान सो ाल नेटवर्किंग साइट्स ने ले लिया है। इतना ही नहीं वर्तमान में कि ाोर परिवार में रहते हुए अपने अभिभावकों से भी संवाद हेतु मोबाइल का प्रयोग करते हैं। उनके व्यवहार, आदतें व दृश्टिकोंण सामाजिक परिवर्तनों के कारण रूपान्तरित हो रहे हैं। आज किशोरों को भी युवाओं का दर्जा दिया जा रहा है जिससे उनकी भूमिकाओं में कुछ परिवर्तन अवश्य आ रहे हैं।

वैश्वीकरण के इस दौर में इंटरनेट व तकनीकी के अभाव में जीवन अधूरा सा लगता है। यद्यपि संचार क्रान्ति ने आधुनिक जीवन को कई प्रकार से लाभान्वित करने के साथ ही जीवन को अत्यधिक सुविधाजनक भी बनाया है लेकिन तकनीक का अत्यधिक प्रयोग स्वास्थ्य के लिए समस्या बनता जा रहा है। यदि स्मार्टफोन के नकारात्मक पक्ष की चर्चा की जाए तो यह आपसी सम्बन्धों में दूरियां कम करने के स्थान पर दूरियों को बढ़ाने का कार्य भी कर रहा है। ऐसी भी खबरें आतीं रहती हैं कि पति–पत्नी के सो ाल मीडिया या मोबाइल पर अत्यधिक सक्रिय रहने के कारण वह एक–दूसरे को पर्याप्त समय नही दे पाते जो कि दाम्पत्य जीवन में तनाव का कारण बन जाता है। इस प्रकार जहॉ मोबाइल सामाजिक सम्बन्धो को बनाए रखने में सहायक है वहीं अलगाव का कारण भी बन जाता है। त्रिवेदी (2026)[9] अपने लेख में बताते है कि डिजिटल दुनियां की मित्रता और भात्रुता केवल एक क्लिक दूर है। यहॉ जब मित्रता न रखनी हो तो ब्लाक कर दीजिए मित्रता समाप्त। इस आभासी दुनियां में इस प्रकार की घटनाएं सामान्य सी होती जा रहीं हैं। पण्ड्या (2003)[10] के अनुसार उन्नत प्रौद्यौगिकी और सूचनाओं की अधिकता के

Copyright © 2026, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कारण स्थिति इतनी दयनीय हो गयी है कि आज ऐसा व्यक्ति मिलना कठिन है जो दबाव, तनाव, चिन्ता से मुक्त तथा संतुलित मस्तिश्क वाला हो।

साइबर अपराध

इस डिजिटल युग ने जहॉ जीवन को सुविधाजनक बनाया है वहीं कई प्रकार की समस्याएं भी उत्पन्न की हैं उनमें से एक समस्या साइबर अपराध और उससे सुरक्षा की है। ऐसा अपराध जो कम्प्यूटर, इंटरनेट और सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से किया जाता है साइबर अपराध कहलाता है। इसे इलेक्ट्रॉनिक अपराध के नाम से भी जाना जाता है। बढ़ते साइबर अपराधों के कारण साइबर सुरक्षा की आव यकता बढ़ रही है। भारत में बहुत बड़ी संख्या में लोग सो ाल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग करते हैं। लेकिन इसके उपयोग के प्रति लोगों में जानकारी की कमी है। इन साइट्स पर लोग अपनी व्यक्तिगत जानकारी साझा करते है जिनको हैकर्स हैक कर सकते हैं। जिसका उपयोग ब्लैकमेल करने के लिए किया जा सकता है। साइबर अपराध में कम्प्यूटर और इंटरनेट से सम्बन्धित अवैध गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला होती है जैसे क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी, पहचान की चोरी, डेटा चोरी, वायरस, हैकिंग, साइबर स्टॉकिंग, साइबरबुलिंग, फि ंग, वि ंग आदि। डीप फेक तेजी से उभरता हुआ एक नया साइबर अपराध है जिसमें अधिकां ातः प्रतिश्ठित लोगों को नि ाना बनाया जाता है।

आज इंटरनेट का उपयोग लगभग हर क्षेत्र में किया जा रहा हैं। इंटरनेट के प्रसार और सुविधा के कारण साइबर अपराध भी बढ़ रहे हैं। सो ाल नेटवर्किंग साइट्स और ऑनलाइन गेम्स का प्रचलन इतना ज्यादा हो गया है कि यह बच्चों को भी बिगाड़ रहा है। साइबर अपराधी विभिन्न ऑनलाइन गेम्स के माध्यम से बच्चों को अपराध के लिए प्रोत्साहित करते हैं। ऑनलाइन गेम्स में कभी–कभी बच्चों की जान तक चली जाती है। साइबर अपराधी वि व में कहीं से भी काम कर सकते हैं जिन्हे पकड़ना चुनौतीपूर्ण काम है। रविकांत (2021)[11] अपने भाोध पत्र में बताते हैं कि साइबर अपराध से संबंधित बढ़ते ऑकड़े चिंताजनक हैं। कंप्यूटर व मोबाइल निर्माण कंपनियों के द्वारा तकनीकी खामियों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा रहा है। लोगों में सो ाल मीडिया व डिजिटल माध्यमों को लेकर सतर्कता व जागरूकता की कमी है। वर्श 2020 में लगभग 1.16 मिलियन साइबर हमलों के ममाले प्रका ा में आए है।

ऑनलाइन अश्लीलता

इंटरनेट की सुलभ उपलब्धता जहॉ दैनिक जीवन को सुविधाजनक बना रही है वहीं इसका दुरुपयोग कई समस्याओं को जन्म दे रहा है उनमें से एक समस्या ऑनलाइन अ लीलता की है। अ लीलता का अर्थ है कोई भी ऐसा कृत्य या चीज जो यौन दृश्टि से उस समय की सामाजिक रूप से स्वीकृत नैतिकता को आघात पहुॅचाती हो। ऑनलाइन अ लीलता का अर्थ इंटरनेट और सो ाल मीडिया प्लेटफार्म पर उपलब्ध ऐसी कामुक या अ लील सामग्री से है जिसको देखना, साझा करना, प्रकाशित करना या डाउनलोड करना सामाजिक मानकों तथा सार्वजनिक नैतिकता के विपरीत है। ऑनलाइन

Copyright © 2026, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अ लीलता को यौन भोशण का ही एक रूप माना जाता है जिसमे दूसरों को नीचा दिखाने या यौन रूप से अपमानित करने वाली सामग्री भामिल होती है। वर्तमान में यूट्यूब व अन्य डिजिटल माध्यमों के अलावा विशेशकर ओटीटी प्लेटफार्म टेलीविजन स्क्रीन से लेकर मोबाइल तक पहुॅच गया है जोकि युवा पीढ़ी के साथ–साथ सभी आयु वर्ग के लोगों को अपनी गिरफ्त में ले रहा है। अश्लील सामग्री परोसते ये प्लेटफार्म युवा वर्ग के साथ–साथ सभी को प्रभावित कर रहे हैं। सारस्वत (2025)[12] बतातीं हैं कि अपने व्यावसायिक हितों के लिए ये प्लेटफार्म बच्चों को अपरिपक्व आयु में ही परिपक्वता की ओर धकेल रहे हैं। अ लील सामग्री लड़कियों व महिलाओं को यौन वस्तुओं के रूप में प्रस्तुत कर रही है। अ लील सामग्री बच्चों तथा युवाओं में हिंसा व अ लीलता के रूप में उनके जीवन में सहज स्वीकार्य हो रही है। पैसे कमाने की शार्टकट होड़ में अश्लील रील्स व वीडियो की पेशेवर प्रवृत्ति आधुनिकता के नाम पर समाज में एक ऐसी संस्कृति को बढ़ावा दे रही है जहॉ नग्नता को ही आधुनिकता का पर्याय माना जा रहा है। यह प्रवृत्ति पारिवारिक संबंध, संस्कृति व नैतिकता को कमजोर कर रही है।

निश्कर्श

इंटरनेट और डिजिटल क्रांति के इस दौर में ऑनलाइन दिनचर्या के बिना जीवन अधूरा सा लगता है। तकनीक जीवन को सुगम बनाने के साथ–साथ साइबर अपराध, ऑनलाइन अरेस्ट, डीप फेक जैसी समस्याएं भी बढ़ा रही है। डिजिटल माध्यमों ने जहॉ लोगों को जोड़ने का काम किया है वहीं इसने आमने–सामने के सम्बन्धों को कमजोर भी किया है। प्रौद्योगिकी ने जीवन को सुविधाजनक तो बनाया है लेकिन निजता या गोपनीयता जैसी समस्याऍ भी बढ़ रहीं हैं। युवाओं का एक वर्ग इंटरनेट का उपयोग आव यकताओं की जगह आनंद के लिए ज्यादा कर रहा है। बच्चों के विकास और देखभाल में दैहिक समाज की अपेक्षा तकनीकी समाज की भूमिका बढ़ती जा रही है।

संदर्भ सूची–

शर्मा, क्ष. (2025, जुलाई 12). रिश्तों को संवारने की नई पाठशाला। दैनिक जागरण समाचार पत्र, बरेली संस्करण,, पृ.10.

त्रिवेदी, यस. व मिश्रा, एस. एम. (2022). इंटरनेट के प्रयोग द्वारा युवाओं में जागरुकता : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नलस ऑफ एडवांस्ड स्टडीज, (ऑनलाइन), ISSN: 2706-8927, वॉल्यूम 4, अंक 4, पृ.147–151. https://www.allstudyjournal.com/article/884/4-4-28-295.pdf

कुमार, आर. (2024). डिजिटल प्रौद्योगिकी और भारतीय जीवन–शैली। आर्यावर्त शोध विकास पत्रिका जर्नल, प्रकाशक ASVP Ballia U.P., ISSN: 2347-2944, वॉल्यूम 18, अंक 32, अप्रैल–जून, पृ.101–104.

गुप्ता, वी. (2026, फरवरी 13). बच्चों को हिंसक बनाता डिजिटल संसार। दैनिक जागरण समाचार पत्र, बरेली संस्करण, पृ. 10.

यादव, ए. के. (2026, जनवरी 13). डिजिटल दुनियां में हो साफ–सफाई। दैनिक जागरण समाचार पत्र, बरेली संस्करण, पृ. 10.

https://www.worldhappiness.report/

मिश्र, बी. (2026, अप्रैल 16). समय से पहले बूढ़ा बना देह। दैनिक जागरण समाचार पत्र, बरेली संस्करण, पृ. 08.

मित्तल, के. व कुमारी, वाई. (2017). उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों की जीवन–शैली का अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अप्लाइड रिसर्च (IJAR) (ऑनलाइन), ISSN: 2394-5869, वॉल्यूम 3, अंक 7, पृ.137–141.

त्रिवेदी, यस. (2026, जनवरी 18). मित्रता की बदलती परिभाशा। दैनिक जागरण समाचार पत्र, बरेली संस्करण, पृ. 06.

Copyright © 2026, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पण्ड्या, पी. (2003). इस युग की महाव्याधि मानसिक तनाव। अखण्ड ज्योति पत्रिका, अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा, वर्श 67, अंक 1, पृ. 14.

रविकांत (2021). साइबर अपराधीकरण के संदर्भ में सोशल मीडिया का प्रभाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अप्लाइड रिसर्च (IJAR) (ऑनलाइन), ISSN: 2394-5869, वॉल्यूम 7,अंक 7, पृ.105–108. https://doi.org/10.22271/allresearch.2021.v7.i7Sc.8688

सारस्वत, आर. (2025, अगस्त 1). आनलाइन अ लीलता पर प्रहार। दैनिक जागरण समाचार पत्र, बरेली संस्करण, पृ. 08.

Copyright © 2026, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies